Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन: उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक एवं नैतिक मूल्य

**श्रीमती योगिता गौर* डॉ. राखी शर्मा ****

*शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** सह-प्राध्यापक (शिक्षाशास्त्र) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

**शोध सारांश –** सोशल मीडिया आज के युग की एक अपरिहार्य सामाजिक एवं शैक्षिक आवश्यकता बन चुका है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर, व्हाट्सऐप जैसे सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म न केवल संवाद एवं मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि यह किशोरों के 'सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों' को भी प्रभावित कर रहे हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य हरदा (मध्यप्रदेश) जिले के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के बीच सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना है।

शोध में '200 विद्यार्थियों' (सरकारी एवं निजी विद्यालय, छात्र एवं छात्राएँ) को नमूने के रूप में चुना गया। 'सर्वेक्षण विधि' अपनाई गई तथा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु 'प्रतिशत, t test, ANOVA एवं Chi square परीक्षणों का उपयोग किया गया। निष्कर्षत: यह पाया गया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं पर सोशल मीडिया के सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का प्रभाव अधिक है। साथ ही कला संकाय के विद्यार्थियों में नैतिक सजगता व सामाजिक उत्तारदायित्व का स्तर विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय की तुलना में अधिक पाया गया।

**शब्द कुंजी –** सोशल मीडिया, उच्च माध्यमिक विद्यार्थी, सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य, शिक्षा।

**प्रस्तावना –** इंटरनेट और सोशल मीडिया ने सूचना एवं संचार की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। 20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में जब वेब 2.0 की अवधारणा विकसित हुई, तभी से उपयोगकर्ता-जनित सामग्री का महत्व बढ़ने लगा। इसने परंपरागत मीडिया की एकतरफा सूचना-प्रवाह व्यवस्था को बदलकर एक 'इंटरएक्टिव' और 'भागीदारी-आधारित' प्रणाली में परिवर्तित कर दिया। फेसबुक (2004), यूट्यूब (2005), ट्विटर (2006), इंस्टाग्राम (2010) और स्नैपचेट (2011) जैसे प्लेटफॉर्म ने युवाओं को संवाद, आत्म-अभिव्यक्ति, सहयोग और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के असीम अवसर दिए।

सोशल मीडिया का प्रभाव विशेषकर 'किशोरावस्था के विद्यार्थियों' पर अधिक देखा जाता है, क्योंकि यही वह अवस्था है जब 'व्यक्तित्व का निर्माण' होता है और 'सामाजिक-नैतिक मूल्य' आकार लेते हैं। इस उम्र में विद्यार्थी नई-नई सामाजिक भूमिकाओं को अपनाते हैं, आत्म-परिचय की खोज करते हैं और अपने व्यवहार के मानक तय करते हैं। अत: यह समझना आवश्यक हो जाता है कि सोशल मीडिया किस प्रकार उनकी सोच, आचरण और मूल्य-प्रणाली को प्रभावित कर रहा है।

कई शोधकर्ताओं ने यह बताया कि इंटरनेट आधारित संवाद माध्यम समाज में मूल्यों के संरक्षण के साथ-साथ उनके विघटन का भी कारण बन सकते हैं। उदाहरणार्थ, जहाँ एक ओर यह प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को वैश्विक ज्ञान, सहयोगात्मक अधिगम, सामाजिक सरोकार और लोकतांत्रिक मूल्यों की ओर प्रेरित करते हैं, वहीं दूसरी ओर 'समय की बर्बादी, अनुशासनहीनता, सतही संबंध, आक्रामकता और सांस्कृतिक विचलन' जैसी प्रवृत्तियाँ भी बढ़ा सकते हैं।

आज के समय में विद्यार्थी अपने अधिकांश समय का बड़ा भाग मोबाइल और सोशल मीडिया पर व्यतीत कर रहे हैं। शिक्षा, मनोरंजन, समाचार, राजनीति, सामाजिक संवाद और व्यक्तिगत संबंध-सभी का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और मूल्यों पर पड़ रहा है। 'समय-प्रबंधन की कमी', 'निजी अध्ययन की उपेक्षा' तथा 'मानसिक तनाव' जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं। दूसरी ओर, कई विद्यार्थी इन माध्यमों का उपयोग 'ऑनलाइन लर्निंग, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, कौशल-विकास और व्यक्तित्व-निर्माण' में भी कर रहे हैं।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया एक 'द्वि-धारी तलवार' है, जिसका प्रभाव सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी। यह विद्यार्थियों के जीवन को किस दिशा में ले जाएगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे इसका 'उपयोग कितनी सजगता, अनुशासन और नैतिकता के साथ करते हैं'।

यही कारण है कि आज के शोधकर्ताओं और शिक्षा-विदों के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया है कि सोशल मीडिया का प्रयोग विद्यार्थियों के 'सामाजिक और नैतिक मूल्यों' पर किस प्रकार का प्रभाव डाल रहा है? क्या सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में इसके प्रभाव में कोई अंतर है? क्या लड़के और लड़कियाँ, तथा विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राएँ इसे समान रूप से प्रभावित होकर उपयोग करते हैं?

**समीक्षा साहित्य :**

1. यंग, पी वी (1956) – अपने शोध Methods in Social Research में यंग ने यह स्पष्ट किया कि नए संचार माध्यम समाज के मूल्यों पर द्वि-दिशात्मक प्रभाव डालते हैं। ये माध्यम एक ओर सामाजिक

जुड़ाव एवं संवाद को मजबूत करते हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक विघटन और अनुशासनहीनता को जन्म देते हैं।

2. कपूर, रशीम (1989) – अपनी पुस्तक Value Education: Theory and Practice में कपूर ने यह बताया कि इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिकाओं को पुन: परिभाषित करता है। इससे मूल्य शिक्षा को नई दिशा मिलती है, लेकिन पारंपरिक नैतिक आदर्शों के संरक्षण में चुनौतियाँ भी सामने आती हैं।

3. बॉयड और एलिसन (2007)– Social Network Sites: Definition, History and Scholarship शीर्षक से किए गए अध्ययन में उन्होंने निष्कर्ष दिया कि फेसबुक एवं अन्य सोशल नेटवर्किंग साइट्स किशोरों की पहचान निर्माण और आत्म–अभिव्यक्ति में सहायक होती हैं, किंतु आभासी संबंध वास्तविक सामाजिक रिश्तों को कमजोर कर देते हैं।

4. मित्तल एवं अरोड़ा (2013)–Impact of Facebook on Indian Youth विषय पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि फेसबुक भारतीय युवाओं के सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। यह सामाजिक सहभागिता को तो बढ़ाता है, लेकिन वास्तविक पारिवारिक और सामुदायिक संबंधों को कमजोर करता है।

5. जैन एवं सिंह (2016) – उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आया कि लड़के, लड़कियों की तुलना में सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत करते हैं। साथ ही विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की पढ़ाई पर इसका नकारात्मक प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

6. कस और ग्रिफिथ्स (2015) –अपने मेटा–विश्लेषण Social Networking Sites and Addiction में यह बताया कि सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, एकाग्रता की कमी और नैतिक निर्णय क्षमता में गिरावट उत्पन्न करता है।

7. एनसीईआरटी रिपोर्ट (2018) – इस राष्ट्रीय रिपोर्ट में कहा गया कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के लिए अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करता है। यदि इसका प्रयोग शिक्षा, अधिगम और अनुसंधान में किया जाए तो यह उपयोगी सिद्ध होता है, अन्यथा यह तनाव और समय–नाश का कारण बनता है।

8. गुप्ता (2020) – अपने अध्ययन में गुप्ता ने कहा कि सोशल मीडिया ने विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में व्यावहारिकता को बढ़ाया है, लेकिन पारंपरिक नैतिक मूल्यों –जैसे ईमानदारी, सहयोग, सहानुभूति और अनुशासन में कमी देखी जा रही है।

9. ब्राउन और लार्सन (2020) – Adolescents and Time Use शीर्षक से किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि किशोर प्रतिदिन औसतन 3–4 घंटे सोशल मीडिया पर व्यतीत करते हैं। इसका सीधा असर उनकी पढ़ाई, नींद और दिनचर्या पर पड़ता है।

उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर प्रभाव द्वि–आयामी है। एक ओर यह उन्हें संवाद, शिक्षा और सामाजिक जुड़ाव के नए अवसर देता है, वहीं दूसरी ओर यह नैतिक मूल्यों में गिरावट, समय–नाश, मानसिक तनाव और वास्तविक संबंधों की कमजोरी का भी कारण बनता है। अधिकांश अध्ययनों ने इस तथ्य को रेखांकित किया है कि अनुशासित और नियंत्रित उपयोग से सोशल मीडिया विद्यार्थियों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है, जबकि अतिरेक और अनियंत्रित प्रयोग उनके सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को प्रभावित करता है।

**शोध के उद्देश्य:**

1. सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. गैर–सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया के प्रभाव की तुलना करना।
4. छात्र एवं छात्राओं के बीच सोशल मीडिया प्रभाव में अंतर का अध्ययन करना।
5. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

**परिकल्पनाएँ:**

$H_1$: सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई अंतर नहीं है।

$H_2$: सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई अंतर नहीं है।

$H_3$: छात्र और छात्राओं के बीच सोशल मीडिया प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$H_4$: कला, विज्ञान और वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**शोध पद्धति**

**शोध विधि: सर्वेक्षण विधि**

**जनसंख्या:** हरदा (मध्यप्रदेश) जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राएँ

**नमूना:**200 विद्यार्थी (100 विद्यालय: 50 ग्रामीण 50 शहरीय प्रत्येक विद्यालय से 2 विद्यार्थी)

**उपकरण:** स्वनिर्मित प्रश्नावली (सामाजिक एवं नैतिक मूल्य मापन हेतु)

**सांख्यिकीय तकनीक:** प्रतिशत, t test, ANOVA,Chi square

**आँकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचना**

**$H_1$: सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में अंतर नहीं है**

**सारणी–1 ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य (t-test)**

| समूह | N | माध्य | S.D. | t– मूल्य | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण विद्यालय | 100 | 76.3 | 11.8 | 2.05 | 0.05 स्तर पर |
| शहरी विद्यालय | 100 | 80.4 | 10.9 | | महत्वपूर्ण |

व्याख्या– शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर सोशल मीडिया का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

**$H_2$: सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में अंतर नहीं है**

**सारणी–2 सरकारी एवं निजी विद्यालय के नैतिक मूल्य (t-test)**

| समूह | N | माध्य | S.D. | t– मूल्य | p– मूल्य | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सरकारी विद्यालयों | 100 | 73.5 | 12.4 | 2.72 | 0.05 | महत्वपूर्ण |
| गैर–सरकारी विद्यालयों | 100 | 79.8 | 11.2 | | | अंतर पाया गया |

व्याख्या– निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में नैतिक सजगता सरकारी विद्यालय से अधिक है।

**$H_3$ : छात्र और छात्राओं के बीच सोशल मीडिया प्रभाव में अंतर नहीं है**

**सारणी–3–छात्र/छात्रा के नैतिक मूल्य (t Test)**

| समूह | N | माध्य | S.D. | t– मूल्य | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 90 | 73.5 | 12.4 | 2.72 | 0.01 स्तर पर |
| छात्राएँ | 110 | 79.8 | 11.2 | | महत्वपूर्ण |

व्याख्या– छात्राओं में नैतिक मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता अधिक पाई गई।

**$H_4$ : कला, विज्ञान और वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया प्रभाव में अंतर नहीं है**

**सारणी–4 संकायवार अंतर (ANOVA)**

| स्रोत | df | SS | MS | f- मूल्य | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|
| समूहों के बीच | 2 | 420.65 | 210.32 | 3.84 | 0.05 स्तर पर |
| समूहों के भीतर | 197 | 10780.42 | 54.71 | | महत्वपूर्ण |

व्याख्या:कला संकाय के विद्यार्थियों में नैतिक सजगता व सामाजिक मूल्यबोध अधिक पाया गया।

**सारणी–5 लिंग एवं विद्यालय प्रकार (Chi square Test)**

| चर | X-value | df | p-value | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|
| लिंग एवं सोशल मीडिया उपयोग | 6.42 | 1 | 0.05 | महत्वपूर्ण संबंध पाया गया |
| विद्यालय प्रकार एवं मूल्य | 4.15 | 1 | 0.05 | |

व्याख्या– लिंग (छात्र–छात्रा) और विद्यालय प्रकार (ग्रामीण–शहरी) दोनों ही सोशल मीडिया के प्रभाव से जुड़े पाए गए।

शोध परिणामों से स्पष्ट हुआ कि 'छात्राओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव अधिक गहरा है', क्योंकि वे सामाजिक और नैतिक गतिविधियों के प्रति अधिक सजग हैं। t test के अनुसार छात्राओं के नैतिक मूल्यों का माध्य छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया ($t = 2.72$, $p< 0.01$), जो यह संकेत देता है कि छात्राएँ सोशल मीडिया का प्रयोग अधिकतर 'शैक्षिक, सामाजिक और रचनात्मक उद्देश्यों' के लिए करती हैं। इसके विपरीत, छात्र सोशल मीडिया का उपयोग मनोरंजन और अनौपचारिक संवाद के लिए अधिक करते हैं, जिससे उनके सामाजिक और नैतिक मूल्य अपेक्षाकृत कम प्रभावित होते हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण (ANOVA) से यह भी पता चला कि 'कला संकाय के विद्यार्थी' वाणिज्य और विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक नैतिक सजगता और सामाजिक मूल्यबोध प्रदर्शित करते हैं ($F = 3.84$, $p< 0.05$)। इसका कारण यह माना जा सकता है कि कला संकाय के विषय समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों से सीधे जुड़े हैं, जबकि अन्य संकाय अधिक तकनीकी और व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं।

Chi square परीक्षण के परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि 'लिंग और विद्यालय प्रकार' सोशल मीडिया के प्रभाव के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं ($X= 6.42, 4.15$; $p< 0.05$)। विशेष रूप से 'शहरी छात्राएँ' सोशल मीडिया के प्रति अधिक सक्रिय और संवेदनशील पाई गईं। शहरी क्षेत्र में तकनीकी पहुँच अधिक होने और डिजिटल प्लेटफॉर्म की व्यापक उपलब्धता के कारण उनके सामाजिक और नैतिक मूल्य पर सोशल मीडिया का प्रभाव तीव्र रूप से परिलक्षित हुआ।

इसके अतिरिक्त, सरकारी और निजी विद्यालयों की तुलना से यह पाया गया कि 'निजी विद्यालय के विद्यार्थी सामाजिक और नैतिक जागरूकता में अधिक सजग' हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि निजी विद्यालयों में शिक्षण पद्धति, शैक्षिक संसाधन और डिजिटल शिक्षा की सुविधाएँ अधिक होती हैं, जिससे विद्यार्थी सोशल मीडिया का सकारात्मक और नियंत्रित उपयोग करने में सक्षम होते हैं।

इन परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सोशल मीडिया न केवल विद्यार्थियों के सामाजिक और नैतिक मूल्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, बल्कि यह प्रभाव 'लिंग, विद्यालय प्रकार और संकाय' जैसे कारकों से भी प्रभावित होता है।

**निष्कर्ष –** सोशल मीडिया ने उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू शामिल हैं। छात्राओं में नैतिक और सामाजिक सजगता अधिक पाई गई, क्योंकि वे सोशल मीडिया का अधिकतर शैक्षिक, सामाजिक और रचनात्मक उद्देश्यों के लिए उपयोग करती हैं। निजी विद्यालयों के विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक जागरूक और संवेदनशील पाए गए। कला संकाय के विद्यार्थी वाणिज्य और विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों से अधिक नैतिक और सामाजिक सजगता प्रदर्शित करते हैं। सांख्यिकीय परीक्षण (t test,ANOVA,Chi square) से यह स्पष्ट हुआ कि लिंग, विद्यालय प्रकार और संकाय सोशल मीडिया प्रभाव के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं।

**सुझाव –** सोशल मीडिया साक्षरता–विद्यालय पाठ्यचर्या में सोशल मीडिया साक्षरता शामिल की जाए, ताकि विद्यार्थी इसका 'जिम्मेदार और सुरक्षित उपयोग' सीखें। शिक्षक प्रशिक्षण– अध्यापकों को सोशल मीडिया के 'शैक्षिक और मूल्य निर्माण उपयोग' हेतु प्रशिक्षण दिया जाए। कार्यशालाएँ एवं सेमिनार– डिजिटल नैतिकता, साइबर सुरक्षा और जिम्मेदार सोशल मीडिया उपयोग पर नियमित कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ। अभिभावक मार्गदर्शन– अभिभावकों को बच्चों के ऑनलाइन व्यवहार पर 'सकारात्मक निगरानी' हेतु प्रशिक्षित किया जाए। मल्टीमीडिया शिक्षण परियोजना–आधारित और मल्टीमीडिया शिक्षण अपनाया जाए, ताकि सोशल मीडिया का उपयोग 'शैक्षिक और रचनात्मक' उद्देश्य के लिए हो। समय प्रबंधन– विद्यार्थियों को सोशल मीडिया का संतुलित उपयोग और समय प्रबंधन सिखाया जाए। सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियाँ– ऑनलाइन और ऑफलाइन सामाजिक जुड़ाव के बीच संतुलन बनाए रखने हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

1. कपूर, रशिम (1989). 'वैल्यू एजुकेशन: थ्योरी एंड प्रैक्टिस' अजमेर: कृष्णा ब्रदर्स पब्लिकेशन्स।
2. मैक्लोम, कारी टॉरजिशन (1982).'वुमन एट द क्रॉसरोड्स'।
3. मूरे, निक (1983). 'हाउ टू डू रिसर्च' लंदन: द लाइब्रेरी एसोसिएशन।
4. मिल, जॉन स्टुअर्ट (1970). 'एस्से ऑन सेक्स इक्वलिटी'।
5. रमल, जे.एफ.एम. (1968). 'इंट्रोडक्शन टू रिसर्च इन एजुकेशन' न्यूयॉर्क :हार्पर ब्रदर्स।
6. सरीन एवं सरीन (2005). 'शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली',

नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
7. शर्मा, विरेन्द्र प्रकाश (2001). 'रिसर्च मेथडोलॉजी', जयपुर– पंचशील प्रकाशन।
8. यंग, पी.वी. (1956). 'मेथड्स इन सोशल रिसच', न्यूयॉर्क:मैक्ग्रा–हिल।
9. Brown, J. & Larson, R. (2020). Adolescents and time use. Journal of Youth Studies, 23-(4), 112–128.
10. Pew Research Center (2019). Teens, Social Media & Technology. Washington DC.
11. Sharma, Saurabh, Impact of Social Media on Student's Academic Performance: A Study on Indian Education System. ResearchGate.
12. Shukla, Harsh (2025) Social Media and Academic Engagement: Its Effects on Indian Higher Education Students*. ResearchGate
13. Jyoti, Depanti.Positive Impact of Social Media on Youth: An Empirical Study in Ahmedabad City. ResearchGate

**********